विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 2 : नई दिल्ली : 6-12 अप्रेल 2018

परमाराध्य आचार्यश्री महाश्रमण अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए सानंद सुखसातापूर्वक दक्षिण भारत में पधार गए हैं। इसी के साथ पूज्यप्रवर द्वारा सन् २०११ के केलवा चतुर्मास में घोषित सुदूर प्रान्तों की यात्रा परिसम्पन्न हो चुकी है। दूसरे शब्दों में कहें तो अहिंसा यात्रा का दूसरा चरण प्रारम्भ हो गया है। पूज्यप्रवर की पूर्वांचल और पूर्वोत्तर की प्रभावक यात्रा चिरकाल तक जनमानस पर प्रतिष्ठित रहेगी। इस यात्रा में न केवल तेरापंथ समाज की आस्था और अधिक घनीभूत बनी, अपितु अन्य जैन एवं जैनेतर समाज में भी आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व और मिशन का व्यापक प्रभाव देखने को मिला। आचार्यप्रवर ने २ अप्रेल २०१८ को अहिंसा यात्रा के अंतर्गत तेरहवें राज्य के रूप में आंध्रप्रदेश में प्रवेश किया। दक्षिण भारत में पूज्यप्रवर के सन् २०२० तक के चतुर्मास घोषित हैं। उसके बाद का चतुर्मास कहां होगा, इस हेतु चतुर्विध धर्मसंघ को २७ जुलाई २०१८ के रात्रि ८ बजे से ९ बजे के बीच के समय की प्रतीक्षा है। इस समय आचार्यप्रवर सन् २०२१ का चतुर्मास घोषित करेंगे, यह पूर्व निर्णीत है।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ओड़िशा में

तीन यामों का लाभ उठाएं

२७ मार्च। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः गोटीगुड़ा से भातपुर की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती चाटीकोना गांव के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान करते हुए मद्य सेवन का त्याग करवाया। आसपास स्थित ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों के कारण विहारपथ आरोहों-अवरोहों और घुमावों से युक्त था। पहाड़ों पर पेड़-पौधे आदि अवस्थित थे, किन्तु वर्षाकाल में दिखने वाला उनका हरापन अभी न्यून बना हुआ था। मार्ग के परिपार्श्व में काजू के सैंकड़ों वृक्ष दृष्टिगोचर हो रहे थे। बताया गया कि ग्रामवासियों को रोजगार देने की भावना से सरकार द्वारा इन्हें सलक्ष्य उगाया गया है। पेड़ों पर लगे काजू अभी कच्ची अवस्था में थे। करीब १४.५ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर भातपुर में पधारे। सरकारी उन्नति विद्यालय में आज का प्रवास हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'मानव जीवन के तीन याम बताए गए हैं--प्रथम याम, मध्यम याम और पश्चिम याम। आठ वर्ष से तीस वर्ष की अवस्था प्रथम याम, तीस वर्ष से साठ वर्ष की अवस्था मध्यम याम और साठ वर्ष के बाद की अवस्था पश्चिम याम होती है। प्रथम याम ज्ञानार्जन, विद्याभ्यास का होता है। इस याम में आदमी गार्हस्थ्य में भी प्रवेश कर सकता है। इस याम में भी आदमी को कुछ धर्माराधना करने का प्रयास करना चाहिए, जैसे--सप्ताह में कम से कम एक सामायिक करने का प्रयास करना चाहिए। इस अवस्था में अच्छे संस्कार अर्जित करने का प्रयत्न भी करना चाहिए। अपनी संतान को अच्छे संस्कार देना, माता-पिता का कर्त्तव्य होता है।

मध्यम याम में अनुकूलता हो तो प्रतिदिन एक सामायिक करने का लक्ष्य रखना चाहिए। प्रातः नाश्ते से पहले-पहले एक सामायिक हो जाए तो मानों वह तो अमृत है। अर्थार्जन में ईमानदारी रखने का प्रयत्न रहना चाहिए। बेईमानी का पैसा अशुद्ध होता है। आदमी को अशुद्ध पैसे से बचना चाहिए।

पश्चिम याम में तो जीवन को विशेष मोड़ देने का प्रयास करना चाहिए। इस अवस्था में प्रतिदिन दो सामायिक करने का लक्ष्य रखना चाहिए। व्यवसाय आदि से कुछ निवृत्ति और धार्मिक-आध्यात्मिक गतिविधियों में अपनी सेवा देने का भी प्रयत्न करना चाहिए। बारहव्रतों को स्वीकार करना चाहिए। फिर आगे सुमंगल साधना को भी स्वीकृत करना चाहिए। आदमी को जब यह लगे कि शारीरिक शक्ति क्षीण हो रही है तो उसे यथौचित्य संलेखना-संथारा की ओर आगे बढ़ना चाहिए। इस प्रकार आदमी तीनों यामों का सम्यक् उपयोग कर मानव जीवन का लाभ उठा सकता है।'

पूज्यप्रवर की प्रेरणा से समुपस्थित ग्रामवासियों और शिक्षकों ने पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के संकल्प भी स्वीकार किए।

सरकारी उन्नति विद्यालय के प्रधानाध्याक श्री सोमनाथ बड़ाका ने कहा--'आज हमारे और हमारे विद्यालय के लिए एक पवित्र दिवस है। इस विद्यालय में देश के महान संत का आगमन हुआ है। अभी गुरुजी ने कहा कि एक फूल खिलता है तो उसकी सौरभ चारों ओर फैलती है। आज गुरुजी के तीन-तीन संदेश फूल की भांति खिलकर हर तरफ अपनी सौरभ बिखेर रहे हैं। आपने अपने एक दिन का पड़ाव का सौभाग्य हमें प्रदान किया, इस कृपा के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूं। आज यह धरती ही नहीं, हमारा पूरा अंचल धन्यता की अनुभूति कर रहा है।'

विद्यालय परिसर में स्थित छात्रावास में रहने वाले छात्र रात्रिकालीन कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर ने कार्यक्रम में पधारकर उन्हें पावन संबोध प्रदान किया।

बोधित्रयी से बनें आत्मजयी

२८ मार्च। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः भातपुर से जे.के.पुर की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती 'बड़ीगांव' के लोगों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति और प्रेरणा प्रदान की। इसी प्रकार देयपुर, थेरुवाली, गुणाखाल और पुदनी के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्यप्रवर ने ग्रामवासियों को पावन प्रेरणा भी प्रदान की। पुदनी गांव में स्थित 'विद्याग्राम' के विद्यार्थी भी आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन प्रतिबोध से लाभान्वित हुए। लगभग १६.० कि.मी. का प्रलम्ब विहार कर आचार्यप्रवर जे.के.पुर में स्थित मॉडल डिग्री कॉलेज में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--तीन प्रकार की बोधि बताई गई है--ज्ञानबोधि, दर्शनबोधि और चारित्रबोधि। हमारा ज्ञान, हमारी श्रद्धा और हमारा आचरण सम्यक होना चाहिए। सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र की प्राप्ति बहुत दुर्लभ होती है। संसारी आत्मा भयंकर अटवी में भ्रमण करती रहती है। इस अटवी में मानव जीवन मिलना बहुत दुर्लभ है और मानव जीवन मिलने पर भी सबको धर्म श्रवण का मौका न भी मिले। धर्म श्रवण का अवसर भी मिल जाए तो उस पर श्रद्धा होना दुर्लभ है और श्रद्धा हो भी जाए तो संयम में पराक्रम दुर्लभ होता है। आदमी को बोधि प्राप्ति और उसे परिपुष्ट बनाने का प्रयास करते हुए मानव जीवन का लाभ उठाना चाहिए।'

महावीर के सक्षम प्रतिनिधि महावीर जयंती के लिए कई प्रलम्ब विहार कर पहुंचे रायगढ़ा

२९ मार्च। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी। जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्म जयंती। परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण की पूर्व निर्धारित यात्रा के क्रम में इस वर्ष की महावीर जयंती का कार्यक्रम मार्गवर्ती बड़ीगांव में समायोज्य था। उस गांव में तेरापंथ समाज ही नहीं, जैन समाज का भी कोई परिवार

निवासित नहीं है। रायगढ़ा के लोगों ने पूज्यप्रवर से महावीर जयंती रायगढ़ा करने की प्रार्थना की। पूर्व निर्धारित यात्रा के अनुसार रायगढ़ा में आचार्यप्रवर का पदार्पण ३१ मार्च को होने वाला था और रायगढ़ा से बड़ीगांव की दूरी करीब २४ किलोमीटर है। ऐसे में यदि महावीर जयंती रायगढ़ा करना हो तो कम दिनों में और अधिक दूरी को पाटने के लिए लंबे-लंबे विहार करना ही एकमात्र विकल्प था। पूज्यप्रवर के मन में भी महावीर जयंती को और अधिक उल्लास के साथ मनाने की भावना प्रबल थी। आचार्यप्रवर ने अपनी इस भावना को फलवान बनाने के लिए रायगढ़ावासियों की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और महावीर जयंती के दिन रायगढ़ा में पहुंचना घोषित कर दिया। इतना ही नहीं, पूज्यप्रवर ने रायगढ़ा के एकदिवसीय प्रवास को बढ़ाकर द्विदिवसीय प्रवास के रूप में निर्धारित कर दिया। अपनी इस घोषणा को साकार करने के लिए आचार्यप्रवर ने प्रखर गर्मी में सोलह से अधिक कि.मी. के कई विहार किए। एक दिन में २१.५ कि.मी. का विहार भी किया। सायंकालीन विहारों को भी स्वीकार किया।

आखिर आज पूज्यप्रवर की घोषणा साकार होने का दिन आ ही गया। आचार्यप्रवर ने प्रातः जे.के. पुर से रायगढ़ा की ओर प्रस्थान किया। उल्लसित रायगढ़ावासी भी सूर्योदय से पूर्व ही पूज्य सन्निधि में पहुंच गए। लोगों की प्रसन्न मुखाकृति उनके आंतरिक उल्लास को दर्शा रही थी। महावीर जयंती और पूज्यप्रवर की ओड़िशा यात्रा की संपन्नता के संदर्भ में पश्चिम ओड़िशावासी भी बड़ी संख्या में आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हो गए।

विहार के दौरान जे.के.पुर के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। पूज्यप्रवर नागवाली नदी पर बने पुल से इस पार पधारे। बी. देवडुला गांव के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर को करबद्ध वंदन किया। ग्राम्य महिलाओं ने 'हुलाहुली' के द्वारा पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की। आचार्यप्रवर ने ग्रामवासियों को मंगल आशीष प्रदान किया।

महावीर जयंती के पावन अवसर पर आचार्यप्रवर के पदार्पण और पूज्यप्रवर का द्विदिवसीय प्रवास प्राप्त कर रायगढ़ा में प्रवासित बाईस श्रद्धालु परिवार अतिशय आह्लादित थे। अन्य जैन एवं जैनेतर समाज में भी उल्लास का वातावरण था। विशाखापट्टनम के लोग भी आज अहिंसा यात्रा की व्यवस्थाओं का दायित्व ग्रहण करने के लिए बड़ी संख्या में उपस्थित थे। चारों ओर श्रद्धा-भक्तिमय वातावरण नजर आ रहा था।

मारवाड़ी समाज, ओड़िया समाज, स्थानकवासी समाज आदि विभिन्न समाजों के लोग पूज्यप्रवर के स्वागत में सोत्साह उपस्थित थे। स्थान-स्थान पर समूह रूप में खड़े लोग पूज्यप्रवर को करबद्ध नतसिर वंदन कर पावन आशीष प्राप्त कर रहे थे। जयनिनादों से वातावरण गुंजायमान बना हुआ था। हीरो शोरूम से प्रारम्भ हुआ स्वागत जुलूस मेन रोड, कपिलास होटल होते हुए उत्कल गौरव मधुसूदन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में पहुंचा। पूज्यप्रवर का द्विदिवसीय प्रवास यहीं हुआ। आज का विहार १२.० कि.मी. का रहा।

अलौकिक चेतना के प्रतीक थे भगवान महावीर

परमाराध्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में महावीर जयंती के संदर्भ में समायोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'आज भगवान महावीर की जन्म जयंती है। महावीर जयंती का मतलब है अलौकिक चेतना की जयंती। महावीर अलौकिक चेतना के प्रतीक थे। उन्होंने तीर्थंकर बनने के लिए कुछ नहीं किया, सिर्फ वीतराग बनने की साधना की और वे तीर्थंकर बन गए। वे विदेह साधना के समर्थ साधक थे। उनके व्यक्तित्व का निर्माण अहिंसा, अभय, पराक्रम और ध्यान के तंतुओं से हुआ। वे अनुत्तर ध्यान के आराधक थे। उनके जीवन का समग्र अध्ययन किया जाए तो ऐसा प्रतीत होता है कि उनके जीवन में ध्यान, कायोत्सर्ग और तपस्या इन तीन तत्त्वों की प्रधानता रही। उनका जीवन और

दर्शन अलग-अलग नहीं है। उन्होंने जैसा जीवन जीया, वैसा ही दर्शन दिया। समता, सहिष्णुता और समन्वय उनके दर्शन के मुख्य अंग थे। भगवान महावीर ने अनुकूल और प्रतिकूल हर परिस्थिति में समता का परिचय दिया। उनके सामने कठिन से कठिन परिस्थितियां आईं, पर वे कभी विचलित नहीं हुए। समता का दीप जलता रहा। उनकी सहिष्णुता विलक्षण थी। उन्हें अपने पथ से विचलित करने के लिए मनुष्यों द्वारा, तिर्यंचों द्वारा और देवों द्वारा अनेक प्रयत्न किए गए, किन्तु कोई भी उनके मन को प्रकंपित नहीं कर सका। इतिहास बताता है कि संगम देव ने एक रात में बीस ऐसे भयंकर कष्ट दिए कि साधारण आदमी हो तो शायद उसका प्राण वियोजन हो जाए। महावीर की सहिष्णुता इतनी विलक्षण थी कि वे अपने संयम के रण में डटे रहे।

भगवान महावीर की हम जन्म जयंती मनाते हैं। हमारी उनके प्रति आस्था है। यद्यपि हमने उनको देखा नहीं, उनको पढ़ा भी बहुत थोड़ा है, लेकिन आस्था से आबद्ध होकर हम उनकी जन्म जयंती मना रहे हैं, यह एक बात है। हम उनके जीवन और दर्शन से संप्रेरित होकर उनको मनाएं अर्थात् हम उनके दर्शन को जीने का प्रयत्न करें। अगर भगवान महावीर के अनुयायी समता और सहिष्णुता को अपने जीवन में स्थान दे सकें तो महावीर जयंती को मानने की अधिक प्रासंगिकता हो सकती है।'

शुभ की निमित्त बने महावीर जयंती

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--

दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चेसु या अणवज्जं वयंति।
तवेसु या उत्तमबंभचेरं, लोगुत्तमे समणे णायपुत्ते।।

जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर आज के दिन दुनिया के सामने प्रकट हुए थे। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी का दिन अपने आप में एक महिमा मंडित दिवस बन गया है। तिथि का वैसे कोई महत्त्व हो न हो, कोई-कोई संयोग ऐसा होता है कि तिथि का भी महत्त्व हो जाता है। अमावस्या का यों कोई विशेष महत्त्व नहीं, प्रत्युत् अमावस्या को थोड़ा असम्मान के भाव से भी देखा जाता है, किन्तु कार्तिकी अमावस्या को कितने उल्लास के साथ मनाया जाता है, क्योंकि वह किसी महापुरुष से जुड़ी हुई है। भगवान राम से कह दें या भगवान महावीर से, दीपावली का दिन जुड़ा हुआ है, इसलिए उसका महत्त्व बढ़ गया। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी का दिन भी भगवान महावीर से जुड़कर महत्त्वपूर्ण बन गया। आज के दिन कितने-कितने स्थानों पर महावीर जयंती समारोह उल्लास के साथ मनाया जाता है। आज की रात्रि में प्रभु का जन्म हुआ। वह रात्रि धन्य होती है, जिसमें महापुरुष का जन्म होता है।

दुनिया में बहुत संतानें उत्पन्न होती हैं, किन्तु प्रभु महावीर जैसे व्यक्तित्व को पैदा करने वाली कोई-कोई मां होती है। त्रिशला ने महावीर को जन्म दिया, इसलिए उन्हें त्रिशलानंदन भी कहा जाता है। किसी दृष्टि से यह सही भी है, किन्तु दूसरी दृष्टि से देखें तो देवानंदानंदन भी होना चाहिए। आज के दिन देवानंदा को भी अपनी विचारणा के साथ याद कर रहा हूं।

भगवान महावीर एक शक्तिशाली पुरुष थे। उनमें बचपन में भी मानों शक्तिशालिता थी। वे निडर थे। भले सांप पेड़ पर दिखाई दिया, उससे भी मानों डरे नहीं। शास्त्रकार ने उन्हें लोकोत्तम कहा। उन्होंने अभयदान दिया था। अहिंसा की साधना में तो उन्हें आदर्श पुरुष के रूप में देखा जा सकता है। भले चंडकौशिक सर्प ने उन्हें काटा, भले शूलपाणि यक्ष मंदिर में कष्ट हुए, और किसी ने भी कुछ किया, किन्तु भगवान महावीर ने किस प्रकार अहिंसा की चेतना बनाए रखी।

भगवान महावीर ने अभयदान दिया, इसलिए वे लोकोत्तम थे। भगवान महावीर अनवद्य सत्य के प्रयोक्ता थे। उन्होंने सत्य का साक्षात्कार किया, इसलिए वे लोकोत्तम थे। उनमें उत्तम तप था, इसलिए वे

लोकोत्तम पुरुष थे। उनमें समता की साधना थी। जहां समता की साधना होती है, वहीं अहिंसा की साधना हो सकती है और सच्चाई की आराधना हो सकती है। भगवान महावीर को चंडकौशिक सर्प ने काटा, यह प्रतिकूलता की स्थिति थी और देवेन्द्र द्वारा उन्हें नमस्कार किया गया, यह अनुकूलता की स्थिति थी। प्रभु महावीर इन दोनों स्थितियों में निर्विशेष अर्थात् सम मन वाले रहे। यह उनकी समता का उदाहरण है।

भगवान महावीर का ज्ञान बचपन में भी कितना विशद था। पिछले कितने जन्मों में उन्होंने साधना की थी, मानों उस साधना की पृष्ठभूमि के कारण वे तीर्थंकर महावीर के रूप में सामने आए।

प्रभु महावीर के अनुयायी जैन लोगों में भी अहिंसा की चेतना परिलक्षित होती है। भगवान महावीर के अनुयायियों में नमस्कार महामंत्र के जप का तो क्रम होना ही चाहिए। यह जैन शासन का बहुत पवित्र मंत्र है। इसके साथ जैन शासन के युवकों, बच्चों आदि को खान-पान पर भी ध्यान देना चाहिए कि कहीं अशाकाहार का सेवन न हो जाए। होटल, हॉस्टल आदि में कहीं जाना हो तो वहां विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए कि वहां का भोजन कैसा है। देश-विदेश में कहीं भी जाएं, ऐसा भोजन नहीं करना चाहिए जो अशाकाहार हो। जैन समाज को इसके प्रति जागरूक रहना चाहिए कि खान-पान की अशुद्धि न हो। जिस दवा में अशाकाहार का मिश्रण हो, उसके सेवन से भी यथासंभव बचना चाहिए। शराब के सेवन से भी जैन समाज के लोगों को बचना चाहिए। शादी हो या और कोई आयोजन, वहां न स्वयं शराब का सेवन करना चाहिए और दूसरों को भी शराब नहीं परोसना चाहिए। हर बात में समझौता नहीं करना चाहिए। कहीं-कहीं कट्टरता भी रखनी चाहिए। समझौतावादी वृत्ति कहीं ठीक है तो कहीं-कहीं कट्टरता भी अपेक्षित होती है। शादी आदि आयोजन में भी शराब, अंडे और मांस का सेवन नहीं हो। कहीं-कहीं अच्छी बात के लिए आदमी को दृढ़ता का भी प्रयोग करना चाहिए। जैन समाज के लोगों में नैतिकता के प्रति भी निष्ठा का भाव रहना चाहिए कि व्यवसाय में अनैतिकता का कार्य न हो। पैसे भले थोड़े कम हों, इतनी खास बात नहीं, नैतिकता को रखना महत्त्वपूर्ण बात होती है।

हम महावीर को मना रहे हैं, यह अच्छी बात है। इसके साथ कुछ प्रेरणा भी ग्रहण करना और भी अच्छी बात होती है। जैन शासन में संवत्सरी की आराधना की जाती है। भाद्रव महीने में पर्युषण महापर्व आता है, संवत्सरी की आराधना भी होती है। मैं संवत्सरी के विषय में आज कुछ बताना चाहता हूं। (पूज्यप्रवर ने पट्ट से नीचे उतरकर खड़े-खड़े संवत्सरी के संदर्भ में जो घोषणा की, वह पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित है।) महावीर जयंती का समारोह हमारे लिए शुभ का निमित्त बने, शुभाशंसा।'

पूज्यप्रवर ने रायगढ़ा समागमन के संदर्भ में कहा--'आज हम रायगढ़ा में आए हैं। अब ओड़िशा की यात्रा सम्पन्नता की ओर है और सामने आंध्रप्रदेश है। ओड़िशा में अच्छा प्रवास हो गया, विभिन्न क्षेत्रों में जाना हो गया। आंध्रप्रदेश में भी सब अच्छा रहे।'

मुख्यमुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कर्मवाद को विवेचित करते हुए कहा--'भगवान महावीर परमज्ञानी थे, केवलज्ञानी थे, सर्वज्ञ और सर्वदर्शी थे। उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षाएं हमें जैन आगमों में उपलब्ध होती हैं। आगमों में कर्मवाद का विशद विवेचन प्राप्त होता है। भारतीय संस्कृति में तीन वाद प्रमुख हैं-ईश्वर कर्तृत्ववाद, अज्ञेयवाद और कर्मवाद। ईश्वर कर्तृत्ववाद को मानने वाले कहते हैं कि व्यक्ति को सुख और दुःख देने वाला ईश्वर है। अज्ञेयवाद को मानने वाले कहते हैं कि जीव सुख-दुःख क्यों पाता है, यह अज्ञात है, किन्तु कर्मवाद कहता है कि जीव अपने पूर्वकृत कर्मों के अनुसार सुख-दुःख का फल प्राप्त करता है। भगवान महावीर का एक विशिष्ट सिद्धांत है कर्मवाद। जीव जैसा कर्म करता है, वैसे फल प्राप्त करता है। कम्प्यूटर के सॉफ्टवेयर की भांति हमारी आत्मा में भी मानों एक सॉफ्टवेयर है। हम जैसी करनी करते हैं, स्वतः प्रक्रिया से भीतर

कर्मों का बंधन होता जाता है। भगवान महावीर का यह शाश्वत घोष है कि स्वयं द्वारा किए गए कर्मों का फल स्वयं को भोगना होता है। आत्मा की अच्छी प्रवृत्ति से शुभ और बुरी प्रवृत्ति से अशुभ कर्मों का बंधन होता है। कर्मों का बंधन इतना गूढ़ होता है कि उसे समझना बहुत कठिन है। जिस प्रकार हजारों गायों में से बछड़ा अपनी मां को खोज लेता है, वैसे ही कर्म अपने कर्ता का अनुगमन करता है। ३१ मार्च का दिन निकट है। गृहस्थ इस समय साल भर का आर्थिक लेखा-जोखा करते हैं। भगवान महावीर की जन्म जयंती यह प्रेरणा देती है कि हम प्रतिदिन अपने दिन भर का लेखा-जोखा करें कि आज मेरे कहीं पाप कर्मों का बंधन ज्यादा तो नहीं हुआ, धर्म के लिए कितना समय लगाया। इस प्रकार धर्म का चिंतन करते हुए सद्ज्ञान और सदाचार के द्वारा अपने आपको अशुभ कर्मों से मुक्त रखा जा सकता है और अपनी आत्मा को उन्नत बनाया जा सकता है।'

मुख्यनियोजिकाजी ने आत्मवाद विषयाधारित अपने अभिभाषण में कहा--'भारतीय दर्शन को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं-आस्तिक और नास्तिक। आस्तिक दर्शन में विश्वास करने वाले लोग आत्मा, कर्म, पुनर्जन्म और मोक्ष को मानते हैं। नास्तिक दर्शन में विश्वास करने वाले इन सब तथ्यों को स्वीकार नहीं करते। जैन दर्शन के अनुसार हर आत्मा परमात्मा बन सकती है। यह तब संभव होता है, जब हम आत्मकर्तृत्व के सिद्धांत को मानें और जैन दर्शन आत्मकर्तृत्व के सिद्धांत को मानता है। यह दर्शन व्यक्ति में एक सक्षमता पैदा करता है कि तुम स्वयं परमात्मा बन सकते हो। हर भक्त भगवान बन सकता है, हर बिन्दु सिंधु बन सकता है, हर रश्मि सूर्य बन सकती है और हर आत्मा परमारात्मा बन सकती है। जैन दर्शन इस दृष्टि से पूर्णरुपेण आत्मा पर आधारित दर्शन है। जैन धर्म में इस बात पर बल दिया गया कि परमात्मा बनने के लिए शरीर, वाणी और मन की प्रवृत्तियों पर ध्यान देना चाहिए। ये तीनों प्रवृत्तियां जितनी कषाय मुक्त रहेंगी, आत्मा उतनी ही शुद्धि को प्राप्त हो सकेगी। हम कषाय के वलय को दूर करने का प्रयास करें और अपनी आत्मा का साक्षात्कार करने का प्रयत्न करें। हमें केवल आत्मा को मानना ही नहीं, आत्मा को जानने के लिए भी प्रयास करना है। परम पूज्य आचार्यप्रवर हमें अपने प्रवचनों में यह संबोध देते रहते हैं कि हम ऐसे कार्य न करें, जिनके कारण हमारी आत्मा मलिन बने। हमारी प्रवृत्ति जितनी शुद्ध होगी, आत्मा निर्मल बन सकेगी और हम आत्म साक्षात्कार की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे।'

साध्वीवर्याजी ने अपने वक्तव्य में 'अनेकांतवाद' को विवेचित करते हुए कहा--'हम बहुत सौभाग्यशाली हैं कि चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन हमें एक ऐसे अनुत्तर व्यक्तित्व प्राप्त हुए, जो स्वयं तैरना जानते थे और दूसरों को भी तारना जानते थे। वे सामान्य समुद्र को नहीं, संसार समुद्र को तर गए और हमें उसे तरने के लिए कुछ सूत्र सिद्धांत दे गए। वे अलौकिक पुरुष थे भगवान महावीर। भगवान महावीर ने ऐसे अनेक सिद्धांत और सूत्र दिए जिनके माध्यम से हम संसार समुद्र को पार कर सकते हैं। उनमें तीन सिद्धांत मुख्य हैं-अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत। एक ही पदार्थ के अनेक धर्मों को विभिन्न दृष्टिकोणों से जानने-समझने का नाम है अनेकांत। सत्य के प्रति समर्पण का नाम है अनेकांत। सम्यक्त्व से सिद्धत्व की साधना का नाम है अनेकांत। अनाग्रह की चेतना को विकसित करने का नाम है अनेकांत। समस्याओं से उलझे संसार को आज भगवान महावीर के अनेकांत की आवश्यकता है। विश्व की समस्याओं को समाहित करने हेतु अनेकांतवाद एक अचूक उपाय है। आज हम आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्मजयंती मना रहे हैं। तीर्थंकर भगवान हमारे मध्य विराजमान नहीं हैं, किन्तु आचार्य तीर्थंकर के प्रतिनिधि होते हैं। इसलिए आचार्यश्री महाश्रमणजी को अनुत्तर तरण-तारण जहाज के रूप में देख रहे हैं। हे तारक! हमें ऐसी शक्ति प्रदान करें, ऐसा वरदान दें कि हमारा अनेकांत रूपी तीसरा नेत्र उद्घाटित रहे, ताकि हम अपनी लक्षित मंजिल मोक्ष को प्राप्त कर सकें।'

तेरापंथ समाज, रायगढ़ा के प्रमुख श्री माणकचंद जैन ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी श्रद्धासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेरापंथी समाज की महिलाओं व कन्याओं ने गीत का संगान करते हुए कुछ संकल्पों का उपहार श्रीचरणों में समर्पित किया।

कल्याण पार्षदों द्वारा श्रद्धाभिव्यक्ति का उपक्रम

हर २६ तारीख को होने वाली कल्याण परिषद की संगोष्ठी हेतु कल्याण पार्षद आज पूज्यसन्निधि में उपस्थित थे। पूज्यप्रवर ने उन्हें विचाराभिव्यक्ति का अवसर देने के लिए संयोजक मुनि को निर्दिष्ट किया। तदनुसार तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री हंसराज बैताला, कल्याण परिषद के संयोजक व महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के महामंत्री श्री संदीप कोठारी, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती कुमुद कच्छारा, अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष श्री अशोक संचेती, महामंत्री श्री प्रमोद जैन और आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री जैन लूणकरण छाजेड़ ने महावीर जयंती के संदर्भ में भावाभिव्यक्ति देते हुए संवत्सरी एकता के संदर्भ में पूज्यप्रवर द्वारा की गई महती घोषणा हेतु श्रीचरणों में कृतज्ञता अर्पित की।

रायगढ़ा के साधुमार्गी जैन समाज के अध्यक्ष श्री अशोक जैन ने कहा--'गुरुदेव! आपके विषय में क्या बोलूं आप तो हमारे दिल में बस गए हैं। रात-दिन, सुबह-शाम चौबीस घंटे बस आप ही आप दिखाई दे रहे हैं। आज आपने संवत्सरी की एकता के संदर्भ में जो उद्घोषणा की है, वह बड़ी उद्घोषणा है। मैं स्थानकवासी संप्रदाय की ओर से आपके प्रति बहुत-बहुत कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं और आपका यह संदेश मैं अपनी ओर से हमारे संतों तक पहुंचाऊंगा। गुरुदेव! आज के दिन एक और आशीर्वाद दे दीजिए कि हम सभी अच्छे गृहस्थ बनें, अच्छे नागरिक बनें और अच्छे श्रावक बनकर आपके श्रीचरणों में रमे रहें।'

ओड़िशा प्रान्तीय तेरापंथी सभा के मंत्री श्री केशवनारायण जैन ने पश्चिम ओड़िशा यात्रा की सम्पन्नता के संदर्भ में अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी। विशाखापट्टनम् ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने महावीर जयंती के संदर्भ में अपनी प्रस्तुति दी। ओड़िशा प्रान्तीय सभा से जुड़े हुए कार्यकर्ताओं ने अहिंसा यात्रा की व्यवस्थाओं को सौंपने तथा विशाखापट्टनम् के कार्यकर्ताओं ने दायित्व ग्रहण करने से पूर्व पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण किया। तत्पश्चात् जैन ध्वज सौंपकर और ग्रहण कर यात्रा व्यवस्थाओं का प्रतीक रूप में हस्तांतरण किया गया।

जैन शासन में वरदान है केश लुंचन

३० मार्च। परम पूज्य आचार्यप्रवर के रायगढ़ा प्रवास का दूसरा दिन। प्रातः परमाराध्य आचार्यप्रवर के मस्तक एवं मुखारविन्द का केश लुंचन हुआ। लुंचन के उपरान्त पूज्यप्रवर को निवेदन किया गया कि दो अक्षम लोगों को दर्शन देने के लिए लोग प्रार्थना कर रहे हैं, किन्तु आचार्यप्रवर स्वयं न पधारकर किसी संत को भी भिजवा दें तो भी कार्य चल जाएगा। करुणानिधान आचार्यप्रवर कुछ ही क्षणों पूर्व करवाए गए लोच की परवाह नहीं की और फरमाया--'मैं ही दर्शन देने के लिए जा आता हूं।' कुछ ही क्षणों में पूज्यप्रवर प्रवास स्थल से प्रस्थित भी हो गए।

आचार्यप्रवर क्रमशः प्रखर बनती हुई धूप में भी करीब ढाई किलोमीटर की यात्रा कर अक्षम लोगों को दर्शन देने उनके घर में पधारे। पूज्यप्रवर के अनुग्रह में अभिस्नात अक्षम व्यक्तियों के परिजन भावविभोर थे। मार्ग में कुछ परिवारों को अपने-अपने घरों के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन और श्रीमुख से मंगलपाठ सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस प्रकार अक्षम लोगों और अन्य भक्तिमान लोगों पर अनुग्रह बरसा कर पूज्यप्रवर

पुनः अपने प्रवास स्थल में पधारे।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में चतुर्विध धर्मसंघ ने पूज्यप्रवर को सविधि वंदन किया और केश लुंचन की सुखपृच्छा करते हुए लुंचन की निर्जरा में सहभागी बनाने की प्रार्थना की। पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के दौरान चतुर्विध धर्मसंघ को लुंचन की निर्जरा में सहभागी बनाने की प्रार्थना के संदर्भ में साधु-साध्वियों को एक-एक घंटा आगम स्वाध्याय तथा श्रावक-श्राविकाओं को सात-सात अतिरिक्त सामायिक करने की प्रेरणा प्रदान की।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के उद्बोधन हुए। आज के कार्यक्रम के दौरान चतुर्दशी के संदर्भ में 'हाजरी' का उपक्रम भी रहा।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--

अतिंतिणे अचवले, अप्पभासी मियासणे।
हवेज्ज उयरे दंते, थोवं लद्धुं न खिंसए।।

शास्त्रकार ने इस श्लोक में एक मजबूत मार्गदर्शन प्रस्तुत किया है। यह साधु के लिए तो है ही, गृहस्थ भी इस श्लोक से आलोक प्राप्त कर सकता है। साधु को तिण-तिण स्वभाव वाला नहीं होना चाहिए। बात-बात में आवेश करने वाला, झुंझलाने वाला नहीं बनना चाहिए। जिस चेहरे से प्रसन्नता टपके, वह अच्छा लगता है। एक आदमी का चेहरा सुन्दर है, किन्तु गुस्से में वह इतना सुन्दर नहीं लगता। चेहरा श्याम है या गौर, यह इतनी महत्त्वपूर्ण बात नहीं, जब गुस्सा आता है, तब गौर वर्ण भी इतना अच्छा नहीं लगता और हंसता-खिलता चेहरा कुछ श्याम वर्ण का होने पर भी अच्छा लग सकता है। चेहरे की सुन्दरता से जुड़ी हुई बात है चित्त की प्रसन्नता। हम चारित्रात्माओं को गुस्सा न आए तो हमारी साधना की दृष्टि से अच्छी बात होती है। गृहस्थ के लिए भी गुस्सा काम का नहीं होता अथवा लगभग काम का नहीं होता। न घर, न समाज, न व्यापार, न व्यवहार और न आत्मा, किसी भी क्षेत्र में गुस्सा काम का नहीं होता। आदमी की यह कमजोरी होती है कि उसे गुस्सा आ जाता है। उसे यथासंभव यथौचित्य यह ध्यान रखना चाहिए कि गुस्से से बचने का यथासंभव प्रयास हो।

साधु को ज्यादा चपलता नहीं रखनी चाहिए। बचपन में भी अतिमात्रा में चपलता नहीं होनी चाहिए। अति हंसी-मजाक नहीं होनी चाहिए और हंसी-मजाक आदि में स्तर की हीनता न आए।, इसका भी हमें ध्यान रखना चाहिए।

साधु को अल्पभाषी रहना चाहिए। बातों में समय को व्यर्थ न गंवाकर अध्ययन आदि अच्छे कार्यों में समय नियोजित करने का प्रयास करना चाहिए। अल्पभाषिता सच्चाई की आराधना में सहयोगी बनती है। ज्यादा बोलने से कहीं कोई असत्य बात मुंह से निकल सकती है।

खाने में संयम रखना चाहिए। संयम की साधना के लिए शरीर का होना आवश्यक होता है और शरीर को चलाने के लिए खाना आवश्यक होता है, किन्तु खाने में जीभ को महत्त्व देने की अपेक्षा साधना और स्वास्थ्य को महत्त्व देना चाहिए। थोड़ा आहार मिलने पर भी आवेश नहीं करना चाहिए, सम रहना चाहिए। वाणी का अपव्यय नहीं करना चाहिए। जीवनशैली अच्छी हो तो जीवशैली (आत्मा की शैली) अच्छी बन सकती है।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'चेहरे की सुन्दरता मैंने गुरुदेव तुलसी में देखी। विराजमान होते तो मानों कोई राजा-महाराजा विराजमान हैं, ऐसा लगता। वर्ण गौर था और चेहरे की बनावट भी सुन्दर थी। जब वे केश लोच करवा लेते, तब उनके चेहरे का सौंदर्य और भी निखर जाता। मैंने देखा कि जब वे मस्तक का लोच करवाते तो उसके साथ मुंह का भी लोच करवा लेते। मूंछ का लोच वे अपने हाथ से करते। मैं भी उनमें एक व्यक्ति हूं, जो गुरुदेव के मुंह और मस्तक का लोच करने में सहभागी रहे हैं।

लोच कुछ कठिन कार्य होता है। हम पुरुष साधुओं के मुंह का लोच (जिनके मुंह पर केश हैं) करना मस्तक के लोच से भी ज्यादा कष्टपूर्ण होता है। कठिन होने पर भी मानसिकता वैसी बन जाए, मनोबल जाग जाए तो फिर सहना भी इतना कठिन नहीं होता। लोच करने के बाद विश्राम करना ही पड़ेगा, यह जरूरी नहीं। लोच होने के तुरन्त बाद भी कार्य में प्रवृत्त हुआ जा सकता है। हां! जो हमारे नए-नए संत हैं, उन्हें लोच के बाद दो-तीन दिनों तक आंखों से ज्यादा पढ़ना नहीं चाहिए। लोच से कोई नुक्सान हो, ऐसी कोई विशेष बात मुझे तो नहीं लगती। लोच तो जैन शासन में वरदान है, ऐसा मानना चाहिए। यह साधुओं की चर्या का एक अंग है। जैसे मृगशिर कृष्णा एकम को विहार करना हमें वरदान है, उसमें मुहूर्त आदि की चिंता नहीं करनी चाहिए। वैसे ही लोच भी एक वरदान है। यह निर्जरा का एक साधन है।'

पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त रायगढ़ावासियों को सम्यक्त्व दीक्षा प्रदान की। तत्पश्चात् साधु-साध्वियों ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र उच्चरित किया। कार्यक्रम में साध्वीवर्याजी का भी अभिभाषण हुआ।

श्री विमल सेठिया ने महावीर जयंती के संदर्भ में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने महावीर जयंती के उपलक्ष में अपनी प्रस्तुति दी। ओड़िशा प्रान्तीय तेरापंथी सभा के कार्याध्यक्ष श्री छत्रपाल जैन ने पूज्यप्रवर की ओड़िशा यात्रा की सम्पन्नता के संदर्भ में अपने मंगलभाव श्रीचरणों में अर्पित किए।

पूज्यप्रवर ने रायगढ़ावासियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'रायगढ़ा में पहले हमारा एक दिन का प्रवास निर्धारित था, अब दो दिन-रात्रि का प्रवास हो रहा है। रायगढ़ा में खूब अच्छा रहे, सामायिक आदि धर्म ध्यान की साधना चलती रहे।'

आगामी कल के प्रलम्ब विहार को देखते हुए पूज्यप्रवर के समक्ष आज सायंकाल विहार करने का प्रस्ताव रखा गया, किन्तु पूज्यप्रवर ने रायगढ़ावासियों पर अनुग्रहवृष्टि करते हुए आज का प्रवास भी यू.जी. एम.आई.टी. में ही करने का निर्णय किया। आज रायगढ़ा जिले की कलेक्टर उषा पूनम गुहा तथा एसपी श्री राहुल पीआर ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया। आज सायंकाल मौसम ने करवट ली। आसमान में हल्के बादल छा गए और हल्की वर्षा भी हुई।

प्रलम्ब विहार के दौरान महातपस्वी के पूज्यचरणों में प्रकृति का प्रणाम

३१ मार्च। परम पूज्य आचार्यप्रवर द्विदिवसीय प्रवास के उपरान्त प्रातः रायगढ़ा से जीमड़ीपेटा की ओर प्रस्थित हुए। आचार्यप्रवर ने प्रस्थान के संदर्भ में रायगढ़ा के भक्तिमान लोग अच्छी संख्या में उपस्थित थे। आज का विहार प्रलंब था, किन्तु आसमान में छाए हुए बादल मानों पूज्यप्रवर की सेवा में प्रस्तुत थे। करीब नौ किलोमीटर तक बादलों ने सूर्य को आच्छादित किए रखा। तदुपरान्त मार्ग के परिपार्श्वस्थ वृक्षों ने यह दायित्व संभाल लिया। काफी दूरी तक वृक्षों ने सूर्य के आतप को बाधित किए रखा। इस कारण सूर्य कहीं-कहीं ही अपनी रश्मियों के माध्यम से पूज्यचरणों का स्पर्श कर पा रहा था। इस प्रकार पूरे विहार में काफी समय तक मानों प्रकृति महातपस्वी आचार्यप्रवर की उपासना में रही। प्रलंब विहार (१७.५ किलोमीटर) की बात ध्यान में होते हुए भी गत कल जब आचार्यप्रवर ने सायंकाल विहार न करने का निर्णय लिया तब साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं के मन में यही चिंतन आ रहा था कि इतनी गर्मी में इतना लंबा विहार कैसे होगा, किन्तु आज जब प्रकृति के इस रूप को देखा तो सभी आचार्यप्रवर की दूरदर्शिता के सम्मुख प्रणत हो गए। बहुत बार के अनुभव के आधार पर कई लोगों का यह भी कहना था--'यह तो आचार्यप्रवर का अतिशय ही है कि जब कभी आचार्यप्रवर की यात्रा के संदर्भ में मौसम की अति प्रतिकूलता की स्थिति संभावित लगती है, प्रकृति और ज्यादा अनुकूल बनकर उस संभावना को निर्मूल-सी बना देती है।

'स्वच्छ मार्ग से पूज्यप्रवर का पदार्पण हो।'--रायगढ़ा के श्रद्धालुओं में इस आग्रह के कारण करीब दो सौ मीटर का विहार और बढ़ गया। यत्र-तत्र खड़े रायगढ़ावासी पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर पावन आशीष ग्रहण कर रहे थे। कई दुकानों आदि के बाहर नजरबट्टू के रूप में 'रखिया फल' (पपीते जैसा फल) लटका हुआ था। पूछने पर बताया गया कि नजर न लगे इस दृष्टि से इस फल को लगाया जाता है तथा एक वर्ष में दो बार--चैत्र शुक्ला प्रतिपदा और आश्विन शुक्ला प्रतिपदा को इसे परिवर्तित किया जाता है।

मांझी गौरी रायगढ़ा की प्रसिद्ध देवी है। उस मंदिर में दक्षिण भारतीय लोग बड़ी संख्या में पहुंचते हैं। मंदिर की ओर जाने वाले मार्ग के निकट लोगों ने पूज्यप्रवर के समक्ष उसके विषय में अवगति प्रस्तुत की। पूज्यप्रवर जिस पथ पर गतिमान थे, वह पथ और उसके परिपार्श्वस्थ 'रेलवे ट्रैक' पहाड़ों को काट कर बनाया गया है। इसलिए कहीं सड़क रेलवे ट्रैक के नीचे की ओर अवस्थित थी तो कहीं ऊपर की ओर। कहीं-कहीं दोनों समान ऊंचाई पर भी अवस्थित थे। झंझावती नदी पर बना पुल पूज्यचरणों के स्पर्श से पावनता को प्राप्त हुआ। लगभग १७.७ कि.मी. का प्रलंब विहार कर आचार्यप्रवर जेमड़ीपेटा में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

बच्चों पर हो चारों ओर से अमृतवर्षा

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'साधु की पर्युपासना के दस लाभ बताए गए हैं। त्यागी, संयमी और ज्ञानी साधु के पास बैठने से कई लाभ हो सकते हैं। साधु की पर्युपासना से कुछ सुनने को मिल सकता है। श्रवण एक ऐसा बीज है, जो विकसित होकर छायादार, सायादार और फलदार वृक्ष का रूप ले सकता है। सुनने से ज्ञान प्राप्त हो सकता है। तीर्थंकरों की देशना को सुनकर कितनों के मन में वैराग्य जाग जाता है। ज्ञान से हेय और उपादेय का विवेक जागृत हो सकता है। इसे विज्ञान कहा गया है। विवेक के बाद आदमी प्रत्याख्यान कर सकता है। इस प्रकार पर्युपासना से दस लाभ प्राप्त हो सकते हैं। आदमी उससे सिद्धि तक को प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार साधुओं की संगति बहुत लाभदायी हो सकती है। आदमी को सत्संगति करनी चाहिए। साधु न मिले तो अच्छे गृहस्थों की संगति से अच्छे संस्कार और अच्छा ज्ञान प्राप्त हो सकता है। सत्संगत आदमी को सुन्दर मार्गदर्शन देने वाली हो सकती है। मार्ग अच्छा और सम्यक् मिल जाए तो मंजिल भी प्राप्त हो सकती है।

जो स्वयं त्यागी होता है, उसकी वाणी का कुछ विशेष प्रभाव हो सकता है। जीवन का एक अच्छा अवसर होता है कि संतों के आसपास रहने का मौका मिले। सत्संगत में रहने से कितने-कितने पापों से बचाव हो सकता है। अच्छी संगति न मिले तो भी बुरी संगति में तो जाना ही नहीं चाहिए। अच्छी संगति से अच्छे संस्कार और बुरे संगति से बुरे संस्कार आ सकते हैं।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'हमारे धर्मसंघ में ज्ञानशालाएं चलती हैं। बच्चों के लिए ज्ञानशाला अच्छा उपक्रम है। सप्ताह में एक दिन भी ज्ञानशाला जाते हैं तो उनको ज्ञानशाला से अच्छे संस्कार, जैन धर्म की शिक्षा और तत्त्वज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। जगह-जगह ज्ञानशालाएं चलती हैं। तेरापंथी महासभा-सभा के तत्त्वावधान में चलने वाली ज्ञानशालाओं में प्रशिक्षक-प्रशिक्षिकाएं बच्चों को किस प्रकार बच्चों को तैयार करते होंगे, संस्कार देते होंगे। छोटे बच्चों को ज्ञानशाला से जोड़ दिया जाए तो ज्ञानशालाओं से 'सत्संगति' वाली बात सिद्ध हो सकती है, अच्छी शिक्षा प्राप्त हो सकती है। विद्यालय में बच्चों को लौकिक शिक्षा भी मिलती है और ज्ञानशाला में धार्मिक शिक्षा भी मिल जाती है तो दोनों का अच्छा समन्वयन और संतुलन हो सकता है। बालपीढ़ी को अच्छा बनाने के लिए परिवार के लोगों को जागरूक रहना चाहिए।

'संस्कार निर्माण शिविर आयोजित होते हैं। मई-जून माह में जब स्कूल की छुट्टियां हो जाती हैं, ऐसे

समय में यदि पंचदिवसीय आदि आवासीय शिविर हों तो उनके माध्यम से बच्चों को अच्छे संस्कार मिल सकते हैं। आवासीय शिविरों में छात्रावास-सी स्थिति बन जाती है। कोई शिविर आवासीय न हो तो भी उसमें यथासंभव प्रशिक्षण का क्रम बन सकता है। एक ओर ज्ञानशाला और संस्कार निर्माण शिविर, दूसरी ओर विद्यालय में जीवन विज्ञान जैसा कोई उपक्रम चलता रहे तो अच्छा है, तीसरी ओर माता-पिता यदि अभिभावक कुछ प्रेरणा देते रहें और चौथी ओर टेलिविजन आदि के माध्यम से अच्छी बातें देखने-सुनने को मिल जाए तो मानों बच्चों पर चारों ओर से संस्कारों की अमृतवर्षा हो जाती है। उसमें अभिस्नात होकर बच्चे निष्णात बन सकते हैं।'

पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के संदर्भ में अवगति और प्रेरणा प्राप्त कर शिक्षकों और अन्य ग्रामीणों ने संकल्पत्रयी स्वीकार की।

प्रधानाध्यापक श्री नवीन दास ने कहा--'हमारी सरजमीं पर इतने बड़े संन्यासी के चरण पड़े, यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। हमने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि इतने बड़े महापुरुष हमारे बीच आएंगे। हमारा गांव और हमारा विद्यालय आपके आगमन से धन्य हो गया। गुरुजी! आप कभी भी मुझे समाज सेवा के लिए याद करेंगे तो मैं अपना परिवार छोड़कर भी हाजिर हो जाऊंगा।'

सायंकाल मौसम बदला और आकाश मेघाच्छादित बन गया। सूर्यास्त से करीब दस मिनट पूर्व ही अंधेरा छा गया। बिजलियां कौंधने लगीं और बादल गरजने लगे। कुछ ही देर में तेज वर्षा भी प्रारम्भ हो गई। अन्य संतों के प्रवास कक्ष से आचार्यप्रवर के प्रवास कक्ष तक जाने में वर्षा के पानी के स्पर्श की संभावना थी। इस कारण पूज्यप्रवर के समीप गुरुवन्दना और पाक्षिक प्रतिक्रमण तक बहुत कम ही संत उपस्थित रह पाए। वर्षा के कारण वातावरण में ठंड का अहसास होने लगा।

प्रदेश बदलने से पहले बदली संस्कृति, बदला परिवेश

१ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर की इस बार की ओड़िशा यात्रा का अंतिम दिन। पूज्यप्रवर ने प्रातः जेमड़ीपेटा से केरड़ा की ओर प्रस्थान किया। गत रात्रि में हुई वर्षा से मिट्टी आर्द्र बनी हुई थी। सूर्योदय से पूर्व उस गीली मिट्टी में से निकलकर हजारों जीव हवा में उड़ने लगे। इस प्रकार जमीन को भेदकर पंखवाले हजारों जीवों को एक साथ निकलते हुए देखना कइयों के लिए नई बात थी। आगम वाङ्मय में ऐसे जीवों को उद्भिज कहा गया है। पूज्यप्रवर की भवानीपटना के बाद की यात्रा चूंकि वन्य और पर्वतीय क्षेत्र में हो रही है, इसलिए यहां विभिन्न जातियों के छोटे-छोटे जीव देखने को मिल रहे हैं। कहीं-कहीं मच्छरों की भी बहुलता दिखाई दे रही है।

गत रात्रि में हुई वर्षा के कारण वातावरण में ठंड व्याप्त थी, किन्तु ज्यों-ज्यों सूर्य ने ऊर्ध्वगमन किया, त्यों-त्यों वह नदारद होती गई। मार्ग के आसपास ऊंचाई लिए खड़े पहाड़, उन पर और उनके आसपास उगे हजारों-हजारों वृक्ष विहारपथ को प्राकृतिक सुषमा प्रदान किए हुए थे। पथ के आसपास आबादी प्रायः कम और जंगल का-सा रूप अधिक था। मार्गवर्ती 'वत्तड़' गांव के ग्राम्यजन पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। ज्यों-ज्यों आंध्रप्रदेश की सीमा निकट होती जा रही है, वहां की संस्कृति, भाषा, परिवेश आदि का प्रभाव स्थानीय जनता पर स्पष्ट देखने को मिल रहा है। रायगढ़ा के बाद के क्षेत्र में हिन्दी और ओड़िया भाषा का प्रचलन प्रायः नहीं है। काफी लोग केवल तेलगु भाषा का ही प्रयोग करते हुए प्रतीत हुए। गांवों और लोगों के नाम भी आंध्रप्रदेश से प्रभावित दिखे। पूज्यप्रवर लगभग ६.० कि.मी. का विहार कर ओड़िशा के सीमांत गांव केरड़ा में पधारे। आज का प्रवास सरकारी एस.एस.डी. हाइस्कूल में हुआ।

12 Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
Date of Publication : 09-04-2018 L.No.-U (C) 200/2018-2020
(Page 1-12) Licence to Post without Pre-payment
6-12 अप्रेल 2018 Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आस्तिक विचारधारा का सिद्धांत है कि पुनर्जन्म होता है। संसारी आत्मा एक जीवन के बाद दूसरे जीवन को धारण करती है। कषाय के कारण आत्मा संसार में भ्रमण करती रहती है। अपने-अपने कृत कर्मानुसार आत्मा अगली गति को प्राप्त होती है। पुनर्जन्म के विषय में संदेह होने पर भी आदमी को बुराइयों से बचने और शुभ कार्य में प्रवृत्त होने का प्रयास करना चाहिए। शुभ कार्य करने से यह जीवन तो शांति में रह ही सकता है, पुनर्जन्म के अस्तित्व की स्थिति में अच्छी गति मिलने की संभावना भी बन सकती है।

पुनर्जन्म का सिद्धांत धार्मिक जगत् का मौलिक सिद्धांत है। इसके बिना संन्यास स्वीकार करने का महत्त्व भी कम हो सकता है। आदमी पुनर्जन्म के सिद्धांत को मानकर पापों से बचने और शुभ कार्यों में प्रवृत्त होने का प्रयास करे, यह काम्य है।'

आगामी कल होने वाले पूज्यप्रवर के दक्षिण भारत में प्रवेश के संदर्भ में दक्षिण भारत के विभिन्न क्षेत्रों से श्रद्धालु आज ही पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में पहुंच गए। देर रात तक भी लोगों के आने का क्रम जारी था। सायंकाल पुनः मौसम बदला और आसमान में बादल उमड़ आए। बिजलियां कौंधने लगी और मेघ गर्जना भी होने लगी। थोड़ी ही देर में कुछ तूफान के साथ वर्षा भी प्रारम्भ हो गई। ऐसा लग रहा था मानों ओड़िशा राज्य पूज्यप्रवर की यात्रा की सम्पन्नता के कारण अश्रुपात कर रहा है। कुछ तीव्र रूप में होने वाली वर्षा और वेग के साथ बहने वाली हवा के कारण वातावरण में अच्छी शीतलता व्याप्त हो गई।

स्मारणा

- सामायिक में मोबाइल फोन से बातचीत न की जाए तथा उसका उपयोग समय देखने के लिए भी नहीं किया जाए। सामायिक के दौरान घंटी बंद न करनी पड़े, ऐसी व्यवस्था रहे। कदाचित् वैसा न किया गया हो और घंटी बजने लगे तो व्याख्यान आदि में होने वाली बाधा को दूर करने के लिए सामायिक में मोबाइल को पूर्ण रूप से बंद किया जाए तो आपत्ति नहीं।
- सामायिक की दृष्टि से पुरुष के लिए पहने हुए वस्त्रों को उतारना आवश्यक नहीं है। अनुकूलतानुसार चद्दर का रहना उपयुक्त है। सामायिक में मुखवस्त्रिका का रहना वांछनीय है।
- सामायिक के लिए आसन (बैठने के लिए वस्त्र का बना हुआ साधन) होना अच्छा है, यदि आसन न हो तो आंगन में बैठकर भी सामायिक की जा सकती है।

(श्रावक-संदेशिका धारा ३६४-३६६)

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

•

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला